|  |
| --- |
| 05. Mai 2024 |
| **6. Sonntag der Osterzeit B** |
| Erste Lesung: Apg 10,25-26.34-35.44-48; Zweite Lesung: 1 Joh 4,7-10; Evangelium: Joh 15,9-17 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 147, 1+2+4 | Herr Jesu Christ, dich zu uns wend |
|  | GL 326, 1+2+4 | Wir wollen alle fröhlich sein |
|  | GL 472, 1-4 | Manchmal feiern wir mitten im Tag |
| Kyrie: | GL 163, 6 | Herr Jesus, du bist unser Friede |
|  | GL 165 | Send uns deines Geistes Kraft |
| Gloria: | GL 706 | Wir beten an |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 98, 1.2-3b.3c-4 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 55,1 | Jubelt, ihr Lande, dem Herrn |
|  | oder Psalmenlied: |  |
|  | GL 551, 1+2 | Nun singt ein neues Lied  |
|  |  |
| Halleluja-Lied: | GL 483, 4 | Liebet einander |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Wer mich liebt, hält mein Wort.* |
|  | *Mein Vater wird ihn lieben* |
|  | *und wir werden bei ihm Wohnung nehmen.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 759 | Der Glaube ist nun fest verbürgt |
|  | GL 456, 1-4 | Herr, du bist mein Leben |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 325, 1-3! | Bleibe bei uns |
|  | GL 445 | Ubi caritas + Priester: „Gepriesen ...“ |
|  | GL 281, 1+4 | Also sprach beim Abendmahle |
|  | GL 464, 1, 5-8 | Gott liebt diese Welt |
|  | GL 784 | Send deinen Geist |
|  |  |  |
| Sanctus | GL 718 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 762 | Verklärter Leib |
| Danksagung: | GL 348, 2+4+5 | Du heller Schein |
|  | GL 366, 1-3 | Jesus Christus, guter Hirte |
|  | GL 357, 3 | Gieß sehr tief in mein Herz hinein |
| Schluss: | GL 474, 4+5 | Wenn wir die Liebe leben |
|  | GL 389, 3!-5 | Dass du mich einstimmen lässt |
|  | GL 817 | Maria, Maienkönigin |